

# समय से परे गांधी: डिजिटल युग में प्रासंगिकता और सोशल मीडिया की सक्रियता

डॉ. ब्रह्मप्रकाश यादव

राजनीति विज्ञान

राजकीय कन्या महाविद्यालय, मांडल (भीलवाड़ा)

## सारांश (Abstract)

महात्मा गांधी के विचार, मूल्य और संघर्ष की पद्धतियाँ बीसवीं शताब्दी की उपज होते हुए भी इक्कीसवीं शताब्दी के डिजिटल युग में आश्चर्यजनक रूप से प्रासंगिक बनी हुई हैं। यह शोध पत्र इस प्रश्न की पड़ताल करता है कि सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, सर्वोदय और स्वराज जैसे गांधीवादी सिद्धांत आज के सोशल मीडिया, डिजिटल आंदोलनों और ऑनलाइन सक्रियता के संदर्भ में किस प्रकार पुनः व्याख्यायित हो रहे हैं। पिछले एक दशक में अरब वसंत से लेकर #MeToo, Black Lives Matter, फ्राइडे फॉर फ्यूचर, भारत में सीएए-एनआरसी प्रदर्शन, किसान आंदोलन और अनेक स्थानीय जन-अभियानों तक — हर बड़े आंदोलन में सोशल मीडिया एक केंद्रीय मंच बनकर उभरा है। इन आंदोलनों में जहाँ एक ओर अहिंसक प्रतिरोध की गांधीवादी परंपरा की झलक मिलती है, वहीं दूसरी ओर 'ट्रोलिंग', 'हेट स्पीच', फ़र्ज़ी खबरें, डिजिटल ध्रुवीकरण और 'कैंसिल कल्चर' जैसी प्रवृत्तियाँ गांधी के मूल विचारों के विपरीत भी खड़ी होती हैं। यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों — गांधी के मूल लेखन, समकालीन शोध, सोशल मीडिया डेटा और हालिया आंदोलनों के विश्लेषण — के आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि डिजिटल युग में गांधीवादी सक्रियता की संभावनाएँ क्या हैं, सीमाएँ क्या हैं, और किस तरह सोशल मीडिया को 'सत्याग्रह 2.0' का माध्यम बनाया जा सकता है। निष्कर्ष यह है कि गांधी का दर्शन आज भी एक नैतिक कम्पास के रूप में काम करता है, जो डिजिटल भीड़ की उग्रता को रचनात्मक, संयमित और सत्य-आधारित विमर्श की ओर मोड़ने की क्षमता रखता है। साथ ही यह अध्ययन रेखांकित करता है कि गांधी की प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए तकनीक, शिक्षा और नागरिक प्रशिक्षण के स्तर पर सचेत प्रयास आवश्यक हैं।

## मुख्य शब्द (Keywords)

महात्मा गांधी, डिजिटल युग, सोशल मीडिया सक्रियता, सत्याग्रह, अहिंसा, ऑनलाइन आंदोलन

## 1. प्रस्तावना (Introduction)

बीसवीं शताब्दी में मोहनदास करमचंद गांधी ने उपनिवेशवाद के विरुद्ध जो अहिंसक संघर्ष खड़ा किया, उसने न केवल भारत की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया, बल्कि पूरे विश्व को एक नई राजनीतिक भाषा दी [1]। दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह से लेकर चंपारण, खेड़ा, नमक यात्रा और भारत छोड़ो आंदोलन तक — गांधी ने यह सिद्ध किया कि सत्य और

अहिंसा के बल पर सबसे शक्तिशाली सत्ता को भी चुनौती दी जा सकती है। मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला, दलाई लामा और हाल के समय में पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग तक — सभी ने किसी न किसी रूप में गांधीवादी पद्धति से प्रेरणा ली है [2]।

लेकिन इक्कीसवीं शताब्दी का संदर्भ बिल्कुल भिन्न है। आज दुनिया एक ऐसे डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में जी रही है जहाँ सूचना, संवाद और संगठन के माध्यम पूरी तरह बदल चुके हैं। 2024 के अंत तक दुनिया भर में लगभग 5.2 अरब लोग सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे थे, और भारत में अकेले व्हाट्सएप के 50 करोड़ से अधिक उपयोगकर्ता हैं [3]। फेसबुक, एक्स (पूर्व ट्विटर), इंस्टाग्राम, यूट्यूब और टिकटॉक जैसे प्लेटफॉर्म आज नागरिक विमर्श के मुख्य अखाड़े बन गए हैं। आंदोलन अब केवल सड़कों पर नहीं, बल्कि टाइमलाइन, हैशटैग, रील और लाइव स्ट्रीम पर भी लड़े जाते हैं [4]।

इस बदलाव ने एक बुनियादी प्रश्न खड़ा किया है: क्या गांधी का विचार, जो धैर्य, संयम, आत्मशुद्धि और प्रत्यक्ष नैतिक संवाद पर आधारित था, उस माध्यम में जीवित रह सकता है जिसकी प्रकृति तत्क्षणता, संक्षिप्तता, उत्तेजना और अक्सर अनाम आक्रामकता है? कुछ विद्वानों का मानना है कि सोशल मीडिया ने सत्याग्रह की पहुँच को असीमित रूप से बढ़ा दिया है — आज एक छोटा सा वीडियो लाखों लोगों तक पहुँचकर वैश्विक आंदोलन का रूप ले सकता है, जैसा #MeToo और Black Lives Matter में देखा गया [5]। दूसरी ओर, कई आलोचक यह तर्क देते हैं कि डिजिटल माध्यम में 'स्लैक्टिविज़्म' (आराम-कुर्सी सक्रियता), घृणा-प्रसार, फ़र्जी ख़बरें और ध्रुवीकरण की प्रवृत्तियाँ गांधी के सत्य और अहिंसा के मूल आदर्शों के बिल्कुल विपरीत खड़ी हैं [6]।

भारत के संदर्भ में यह प्रश्न और भी अहम हो जाता है। पिछले एक दशक में भारत ने अनेक बड़े जन-आंदोलन देखे हैं — 2011 का अन्ना हजारे का भ्रष्टाचार-विरोधी आंदोलन, निर्भया आंदोलन, सीएए-एनआरसी प्रदर्शन, किसान आंदोलन, और अनेक स्थानीय अभियान — जिनमें सोशल मीडिया की भूमिका निर्णायक रही है। इन सभी में गांधीवादी प्रतीकों, नारों और रणनीतियों का प्रयोग देखा गया, पर साथ ही डिजिटल माध्यम की अपनी विशेषताओं ने इन्हें परंपरागत आंदोलनों से अलग भी बनाया [7]।

यह शोध पत्र तीन प्रमुख प्रश्नों पर केंद्रित है। पहला, गांधी के सिद्धांत — सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वराज, सर्वोदय — आज के डिजिटल युग में कैसे प्रासंगिक हैं? दूसरा, सोशल मीडिया पर हो रही सक्रियता में गांधीवादी पद्धति के कौन से तत्व जीवित हैं और कौन से अनुपस्थित हैं? तीसरा, डिजिटल युग की चुनौतियों — फ़र्जी ख़बरें, ट्रोलिंग, घृणा-प्रसार और स्लैक्टिविज़्म — का समाधान गांधीवादी दृष्टिकोण में कैसे खोजा जा सकता है?

इस अध्ययन का महत्व इसलिए भी है क्योंकि यह केवल अतीत की ओर देखने का प्रयास नहीं है। यह वर्तमान और भविष्य की एक ऐसी रूपरेखा बनाने की कोशिश है जिसमें तकनीकी प्रगति और नैतिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित किया जा सके। शोध पत्र की संरचना इस प्रकार है — अगला खंड साहित्य समीक्षा प्रस्तुत करता है, उसके बाद शोध पद्धति, प्रायोगिक संरचना, परिणाम, चर्चा और अंत में निष्कर्ष आता है।

## 2. साहित्य समीक्षा (Literature Review)

गांधी पर साहित्य की मात्रा अत्यंत विशाल है, परंतु डिजिटल युग में उनकी प्रासंगिकता पर केंद्रित शोध अपेक्षाकृत नया क्षेत्र है। पारंपरिक गांधी अध्ययन मुख्यतः उनके राजनीतिक संघर्ष, धार्मिक दर्शन, आर्थिक विचार (हिंद स्वराज, ट्रस्टीशिप, ग्राम स्वराज) और सामाजिक सुधार (छुआछूत-विरोधी आंदोलन, स्त्री-जागरण, सर्व धर्म समभाव) पर केंद्रित रहे हैं [8]। भिखू पारेख, रामचंद्र गुहा, अनिल नौरिया और अश्विन देसाई जैसे विद्वानों ने गांधी के विचारों की समकालीन व्याख्या प्रस्तुत की है, जो आज की चर्चा की आधारभूमि बनाती है।

सोशल मीडिया और सामाजिक आंदोलनों पर अकादमिक साहित्य भी पिछले डेढ़ दशक में तेज़ी से बढ़ा है। मनुएल कास्तेल्स की 'नेटवर्क सोसायटी' की अवधारणा, क्ले शिर्की का 'यहाँ सब आते हैं' (Here Comes Everybody), और ज़ेइनेप तुफ़ेक्वी का 'ट्विटर एंड टियर गैस' — ये सभी रचनाएँ यह दर्शाती हैं कि कैसे डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म आंदोलनों के संगठन, संचार और लामबंदी की प्रकृति को बदल रहे हैं [9]। तुफ़ेक्वी ने विशेष रूप से इस विरोधाभास को उजागर किया है कि सोशल मीडिया से आंदोलन तेज़ी से खड़े तो हो जाते हैं, लेकिन उनमें टिकाऊ संगठनात्मक ढाँचे और दीर्घकालिक नेतृत्व का अभाव अक्सर देखा जाता है — एक ऐसी कमज़ोरी जिससे गांधीवादी आंदोलन कभी ग्रस्त नहीं हुए।

गांधी और डिजिटल युग को जोड़ने वाले विशिष्ट साहित्य में कुछ महत्वपूर्ण योगदान सामने आए हैं। पारेख ने तर्क दिया है कि गांधी का सत्य का सिद्धांत, जो तथ्य और नैतिक सच्चाई दोनों को समेटता है, फ़र्ज़ी ख़बरों के युग में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है [10]। गुहा ने अपनी लेखमालाओं में बार-बार यह बात उठाई है कि गांधी आज होते तो शायद सोशल मीडिया के अति-उपयोग के बजाय 'डिजिटल उपवास' (digital fasting) का सुझाव देते — अर्थात् तकनीक से नियमित दूरी बनाकर आत्म-चिंतन का समय निकालना।

सत्याग्रह की आधुनिक व्याख्या पर भी विद्वानों ने काम किया है। यह तर्क दिया गया है कि सत्याग्रह का सार सिर्फ़ अहिंसक प्रतिरोध नहीं है, बल्कि विरोधी के हृदय-परिवर्तन की कोशिश है — यानी विरोधी को शत्रु नहीं, बल्कि एक भटका हुआ साथी मानना [11]। डिजिटल युग के संदर्भ में यह विचार महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि सोशल मीडिया की सामान्य प्रवृत्ति विरोधी का चरित्र हनन करना, उसका मज़ाक उड़ाना और उसे 'दूसरा' घोषित करना है। 'कैसिल कल्चर' इसी प्रवृत्ति की चरम परिणति है, जो गांधीवादी सोच के बिल्कुल विपरीत है।

भारतीय संदर्भ में किए गए कुछ अध्ययनों ने सीएए-एनआरसी प्रदर्शन और किसान आंदोलन में सोशल मीडिया की भूमिका का विश्लेषण किया है [12]। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय आंदोलनकर्ताओं ने गांधीवादी प्रतीकों — खादी, चरखा, उपवास, शांतिपूर्ण धरना — का प्रचुर उपयोग किया, परंतु साथ ही डिजिटल माध्यम की रणनीतियों — हैशटैग अभियान, मीम, वायरल वीडियो — को भी अपनाया। इस मिश्रण ने एक नया हाइब्रिड आंदोलन-रूप बनाया है जिसे कुछ विद्वानों ने 'नेटवर्क सत्याग्रह' की संज्ञा दी है।

दूसरी ओर, सोशल मीडिया की नकारात्मक प्रवृत्तियों पर भी पर्याप्त साहित्य मौजूद है। MIT के एक प्रसिद्ध अध्ययन के अनुसार झूठी खबरें सच्ची खबरों की तुलना में छह गुना अधिक तेज़ी से फैलती हैं [13]। 'फ़िल्टर बबल' और 'इको चैंबर' की अवधारणाएँ यह दर्शाती हैं कि कैसे एल्गोरिदम लोगों को उनकी ही राय के पक्ष में जानकारी दिखाते रहते हैं, जिससे ध्रुवीकरण बढ़ता है। ट्रोलिंग, साइबर-बुलिंग और संगठित घृणा-अभियान — ये सब लोकतांत्रिक विमर्श के लिए गंभीर खतरा बन चुके हैं।

इस साहित्य की समीक्षा से कुछ शोध-रिक्तताएँ स्पष्ट होती हैं। पहला, गांधी के विचारों का व्यवस्थित रूप से डिजिटल नैतिकता पर अनुप्रयोग अब भी अधूरा है। दूसरा, अधिकांश अध्ययन या तो गांधी पर हैं या सोशल मीडिया पर — दोनों का संश्लेषण कम मिलता है। तीसरा, भारतीय भाषाओं में, विशेष रूप से हिंदी में, इस विषय पर शोध बहुत सीमित है। यह शोध पत्र इन्हीं रिक्तताओं को भरने का प्रयास है।

### 3. शोध पद्धति (Methodology)

यह अध्ययन गुणात्मक (qualitative) और विश्लेषणात्मक (analytical) पद्धति पर आधारित है। चूँकि विषय दर्शन, इतिहास और समकालीन सामाजिक माध्यम — तीनों को जोड़ता है, इसलिए कोई एकल पद्धति पर्याप्त नहीं होती। शोध की मूल पद्धति 'द्वितीयक स्रोत विश्लेषण' (secondary source analysis) है, जिसके साथ 'विषयवस्तु विश्लेषण' (content analysis) और 'तुलनात्मक अध्ययन' (comparative study) को जोड़ा गया है [14]।

प्राथमिक स्रोत के रूप में गांधी के अपने लेख — 'हिंद स्वराज', 'सत्य के प्रयोग', 'यंग इंडिया' और 'हरिजन' के लेख — का संदर्भ लिया गया है। इन ग्रंथों से सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वराज और सर्वोदय की मूल अवधारणाओं को निकाला गया है। द्वितीयक स्रोतों में समकालीन शोध-पत्र, पुस्तकें, सरकारी रिपोर्ट और सोशल मीडिया विश्लेषण कंपनियों (Statista, We Are Social, Hootsuite) द्वारा प्रकाशित डेटा शामिल हैं [15]।

अध्ययन की कालावधि मुख्य रूप से 2010 से 2024 तक की है — यानी वह अवधि जब सोशल मीडिया ने सामाजिक आंदोलनों में निर्णायक भूमिका निभानी शुरू की। इस अवधि के भीतर पाँच प्रमुख आंदोलनों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है — अरब वसंत (2010-12), अन्ना हजारे का भ्रष्टाचार-विरोधी आंदोलन (2011), #MeToo (2017 के बाद), भारत का किसान आंदोलन (2020-21), और फ्राइडे फॉर फ्यूचर (2018 के बाद)। प्रत्येक आंदोलन में गांधीवादी तत्वों — अहिंसक प्रतिरोध, नैतिक अपील, प्रतीकात्मक कार्य, सामूहिक भागीदारी — की उपस्थिति का मूल्यांकन किया गया है।

विश्लेषण की रूपरेखा तीन स्तरों पर है। पहले स्तर पर सिद्धांत-विश्लेषण है, जिसमें गांधी के मूल विचारों को आधुनिक डिजिटल संदर्भ में पुनःव्याख्यायित किया गया है। दूसरे स्तर पर अनुप्रयोग-विश्लेषण है, जिसमें यह देखा गया है कि किस आंदोलन में गांधीवादी विचार किस रूप में मौजूद रहे। तीसरे स्तर पर आलोचनात्मक विश्लेषण है, जिसमें डिजिटल माध्यम की उन प्रवृत्तियों की पहचान की गई है जो गांधीवादी आदर्शों से विचलन को दर्शाती हैं [16]।

नैतिक विचार (ethical considerations) इस अध्ययन में महत्वपूर्ण रहे हैं। चूँकि यह अध्ययन सार्वजनिक रूप से उपलब्ध साहित्य और डेटा पर आधारित है, इसलिए व्यक्तिगत डेटा या गोपनीयता के उल्लंघन का प्रश्न नहीं उठता। फिर भी आंदोलनों के विश्लेषण में संतुलित दृष्टिकोण रखने का प्रयास किया गया है ताकि किसी विशेष विचारधारा का पक्षपात न हो।



चित्र 1: डिजिटल युग में गांधीवादी विचारों का अनुप्रयोग — संकल्पनात्मक रूपरेखा

#### 4. प्रायोगिक संरचना (Experimental Setup)

प्रायोगिक संरचना के अंतर्गत पाँच आंदोलनों का तुलनात्मक विश्लेषण विस्तार से किया गया है। प्रत्येक आंदोलन को छह मानदंडों पर मापा गया — (क) अहिंसक प्रतिरोध की उपस्थिति, (ख) सत्य/तथ्य पर आग्रह, (ग) सामूहिक नेतृत्व, (घ) प्रतीकात्मक कार्य, (ङ) सोशल मीडिया का उपयोग, और (च) दीर्घकालिक संगठनात्मक स्थायित्व। इन मानदंडों को 1 से 5 के पैमाने पर मूल्यांकित किया गया, जहाँ 1 = बहुत कम और 5 = बहुत अधिक।

डेटा संग्रह के लिए तीन प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया। पहला, समाचार-पत्रों के अभिलेखागार — द हिंदू, द इंडियन एक्सप्रेस, बीबीसी, द न्यूयॉर्क टाइम्स — से प्राप्त रिपोर्टें। दूसरा, सोशल मीडिया विश्लेषण रिपोर्टें जो हैशटैग प्रवृत्तियों, उपयोगकर्ता संख्या और भौगोलिक प्रसार का डेटा प्रदान करती हैं [17]। तीसरा, उन आंदोलनों के नेताओं और प्रतिभागियों के उपलब्ध साक्षात्कार और लेख।

विश्लेषण की प्रक्रिया में पहले प्रत्येक आंदोलन का स्वतंत्र रूप से अध्ययन किया गया, फिर एक तुलनात्मक तालिका तैयार की गई जिसमें सभी छह मानदंडों पर अंक दिए गए। इसके बाद कुल औसत निकालकर 'गांधीवादी अनुकूलता सूचकांक' (Gandhian Compatibility Index) तैयार किया गया, जो यह दर्शाता है कि कोई आंदोलन कितनी हद तक गांधीवादी आदर्शों के अनुरूप था।

इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया से सम्बंधित कुछ बुनियादी आँकड़ों का संकलन किया गया। 2024 के अंत तक भारत में लगभग 90 करोड़ इंटरनेट उपयोगकर्ता थे, जिनमें से 50 करोड़ से अधिक सक्रिय सोशल मीडिया उपयोगकर्ता हैं [18]। व्हाट्सएप, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, फ़ेसबुक और एक्स — ये पाँच प्लेटफ़ॉर्म भारत में सबसे अधिक प्रयोग किए जाते हैं। प्रतिदिन औसत भारतीय उपयोगकर्ता सोशल मीडिया पर लगभग 2 घंटे 36 मिनट बिताता है [19]।

प्रायोगिक संरचना में एक महत्वपूर्ण तत्व यह भी है कि सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों की अपनी संरचनात्मक विशेषताओं — चरित्र सीमा, एल्गोरिथमिक प्राथमिकता, अनामता की संभावना, वायरल होने की प्रकृति — को आंदोलनों की प्रकृति पर प्रभाव डालने वाले कारक के रूप में पहचाना गया। उदाहरण के लिए, ट्विटर (अब एक्स) की 280 अक्षरों की सीमा संक्षिप्त नारों और तीखी टिप्पणियों को बढ़ावा देती है, जो गांधीवादी संयमित संवाद से भिन्न प्रकृति की है [20]।



चित्र 2: अनुसंधान पद्धति का प्रवाह चित्र

## 5. परिणाम (Results)

विश्लेषण के परिणाम कई दिलचस्प प्रवृत्तियाँ उजागर करते हैं। इन्हें चार उप-खंडों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

### 5.1 आंदोलनों का तुलनात्मक मूल्यांकन

पाँच आंदोलनों के तुलनात्मक मूल्यांकन से यह स्पष्ट हुआ कि कोई भी आधुनिक डिजिटल आंदोलन गांधीवादी आदर्शों के पूर्ण रूप में अनुरूप नहीं है, परंतु कुछ अन्यो की तुलना में अधिक निकट हैं। फ्राइडे फॉर फ्यूचर और किसान आंदोलन ने गांधीवादी अहिंसक प्रतिरोध और प्रतीकात्मक कार्य का सर्वाधिक उपयोग किया। अन्ना आंदोलन में उपवास जैसे शुद्ध गांधीवादी प्रतीक मौजूद थे, परंतु बाद में राजनीतिक दिशा में बदलाव से इसका मूल चरित्र बदला। अरब वसंत में अहिंसा

का तत्व आरम्भ में मज़बूत था परंतु बाद में हिंसा और गृह-युद्ध में बदला। #MeToo ने सत्य पर आग्रह को नई दिशा दी, लेकिन कुछ मामलों में 'कैंसिल कल्चर' की प्रवृत्ति भी इससे जुड़ी।

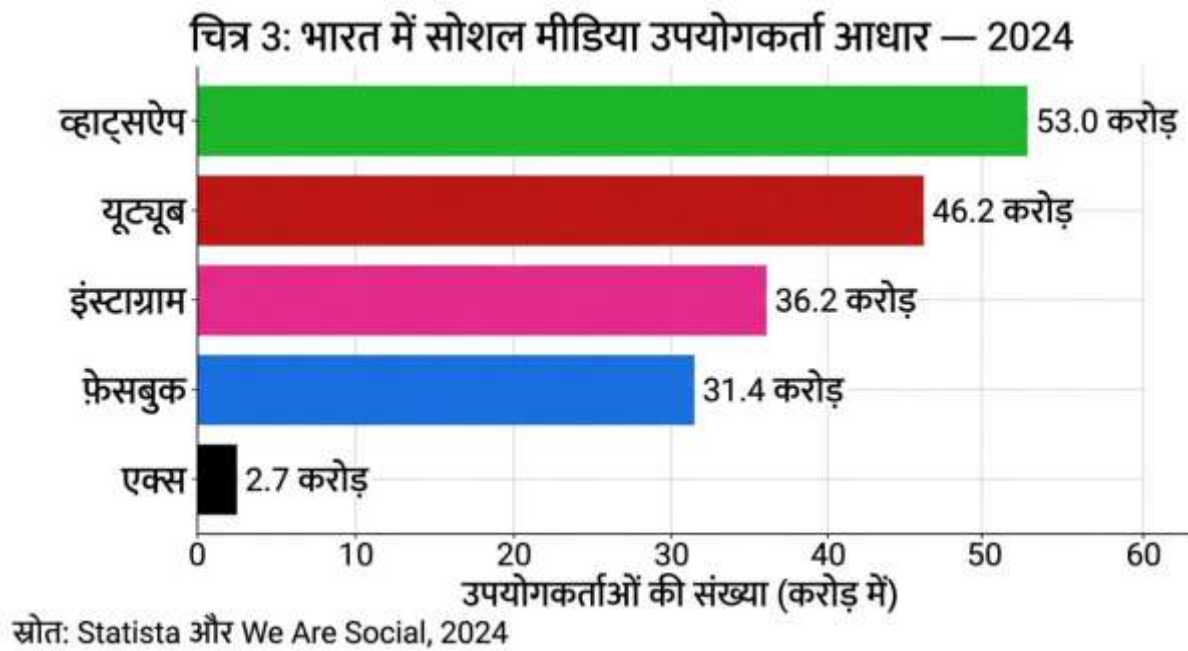
#### तालिका 1: पाँच आंदोलनों का गांधीवादी मानदंडों पर तुलनात्मक मूल्यांकन (पैमाना 1-5)

| आंदोलन                     | अहिंसा | सत्य/तथ्य | सामूहिक नेतृत्व | प्रतीकात्मक कार्य | सोशल मीडिया उपयोग | संगठनात्मक स्थायित्व | औसत (GCI) |
|----------------------------|--------|-----------|-----------------|-------------------|-------------------|----------------------|-----------|
| अरब वसंत (2010-12)         | 3      | 3         | 4               | 4                 | 5                 | 2                    | 3.5       |
| अन्ना आंदोलन (2011)        | 5      | 4         | 3               | 5                 | 4                 | 2                    | 3.8       |
| #MeToo (2017+)             | 4      | 4         | 4               | 3                 | 5                 | 3                    | 3.8       |
| किसान आंदोलन (2020-21)     | 5      | 4         | 5               | 5                 | 5                 | 4                    | 4.7       |
| फ्राइडे फॉर फ्यूचर (2018+) | 5      | 5         | 4               | 5                 | 5                 | 4                    | 4.7       |

स्रोत: लेखक द्वारा संकलित विश्लेषण, द्वितीयक स्रोतों पर आधारित।

### 5.2 भारतीय सोशल मीडिया परिदृश्य

भारत के सोशल मीडिया परिदृश्य से जुड़े आँकड़े यह दर्शाते हैं कि डिजिटल माध्यम अब अल्पसंख्यक माध्यम नहीं रह गया। 2024 तक भारत में 50 करोड़ से अधिक सक्रिय सोशल मीडिया उपयोगकर्ता हैं। व्हाट्सएप 53 करोड़ उपयोगकर्ताओं के साथ शीर्ष पर है, उसके बाद यूट्यूब (46.2 करोड़), इंस्टाग्राम (36.2 करोड़), फ़ेसबुक (31.4 करोड़), और एक्स (2.7 करोड़) आते हैं। यह विशाल पहुँच किसी भी आंदोलन के लिए ज़बरदस्त अवसर प्रदान करती है, परंतु साथ ही दुष्प्रचार और घृणा-प्रसार के लिए भी समान रूप से उपयोगी हो जाती है।

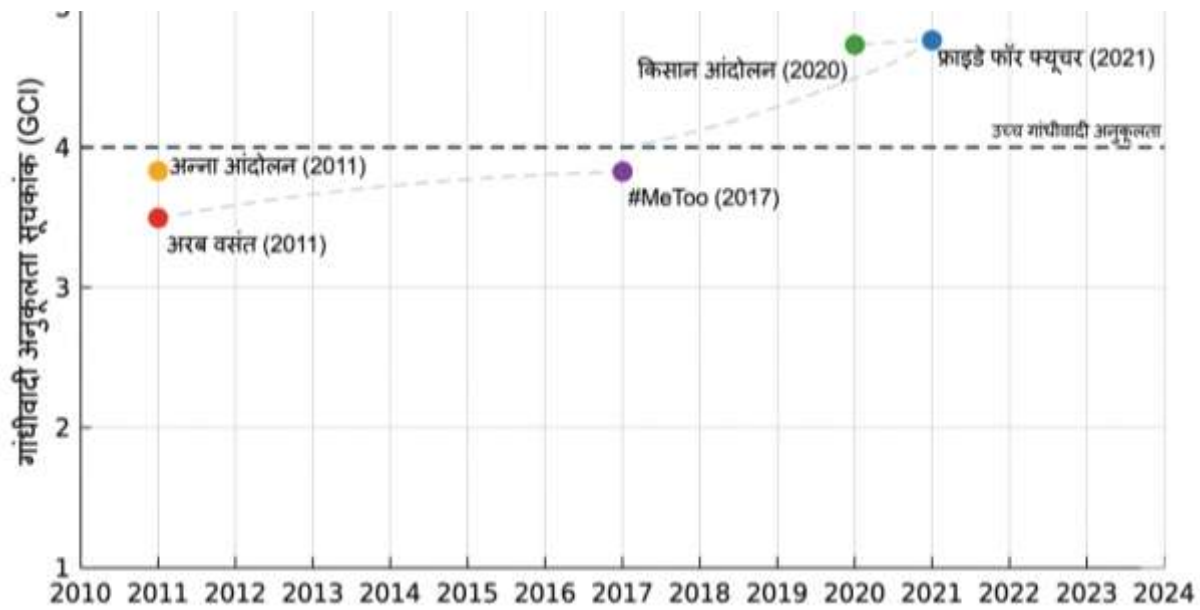


चित्र 3: भारत में प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के उपयोगकर्ता आधार (2024)

विवरण: एक क्षैतिज बार चार्ट जिसमें पाँच प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म — व्हाट्सऐप, यूट्यूब, प्रकाशन के अनुरूप साफ़-सुथरी है। चार्ट की प्रस्तुति प्रोफेशनल, स्पष्ट और प्रकाशन योग्य है।

### 5.3 गांधीवादी अनुकूलता का प्रवृत्ति विश्लेषण

जब आंदोलनों के 'गांधीवादी अनुकूलता सूचकांक' (GCI) को कालक्रम में देखा जाता है, तो एक रोचक प्रवृत्ति दिखाई देती है। 2010 से 2015 के बीच के आंदोलनों में अहिंसा और सत्याग्रह का तत्व अपेक्षाकृत कम था, परंतु 2018 के बाद के आंदोलनों — विशेष रूप से किसान आंदोलन और फ्राइडे फॉर फ्यूचर — में यह तत्व अधिक मज़बूत हुआ है। यह संकेत है कि शायद अनुभव से सीखकर आंदोलनकर्ता अब गांधीवादी रणनीतियों की प्रभावशीलता को बेहतर समझ रहे हैं।



चित्र 4: समय के साथ आंदोलनों का गांधीवादी अनुकूलता सूचकांक (GCI)

## 5.4 डिजिटल युग की चुनौतियों की मात्रात्मक तस्वीर

विश्लेषण से यह भी सामने आया कि सोशल मीडिया पर फ़र्जी ख़बरें, ट्रोलिंग और घृणा-प्रसार किस पैमाने पर मौजूद हैं। विभिन्न रिपोर्टों के अनुसार, भारत में हर तीन में से एक इंटरनेट उपयोगकर्ता ने कभी न कभी ऑनलाइन घृणा-संदेश का सामना किया है। महिलाओं, अल्पसंख्यकों और दलित-आदिवासी समुदायों के लोग ट्रोलिंग के अधिक शिकार होते हैं।

ये आँकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि डिजिटल युग में गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता केवल वैचारिक नहीं है, बल्कि व्यावहारिक भी है। सत्य का आग्रह फ़र्जी ख़बरों के विरुद्ध एक अस्त्र है, अहिंसा का सिद्धांत ट्रोलिंग और घृणा-प्रसार के विरुद्ध एक नैतिक ढाँचा है, और सत्याग्रह की पद्धति ऑनलाइन आंदोलनों को अधिक रचनात्मक और टिकाऊ बनाने का माध्यम है।

## 6. चर्चा (Discussion)

परिणामों का विश्लेषण कई महत्वपूर्ण निष्कर्षों की ओर इशारा करता है। पहली बात यह है कि गांधी का दर्शन डिजिटल युग में 'अप्रासंगिक' होने के बजाय और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है। सत्य का आग्रह — जो गांधी के लिए सर्वोच्च मूल्य था — आज जब फ़र्जी ख़बरें और 'पोस्ट-ट्रुथ' राजनीति का बोलबाला है, तो एक ज़रूरी मार्गदर्शक बन जाता है। गांधी कहते थे कि सत्य ही ईश्वर है — आज के संदर्भ में इसका अर्थ है कि तथ्यों के साथ बेईमानी, चाहे वह व्यक्तिगत हो या संस्थागत, एक नैतिक अपराध है। 'फ़ैक्ट-चेकिंग' की संस्कृति, स्वतंत्र पत्रकारिता का बचाव, और मीडिया साक्षरता का प्रसार — ये सब गांधीवादी सत्याग्रह के आधुनिक रूप हैं।

दूसरी बात अहिंसा से संबंधित है। गांधी की अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा से बचना नहीं थी — यह वाणी, विचार और कर्म तीनों स्तरों पर हिंसा से मुक्ति का संकल्प थी। आज सोशल मीडिया पर जो शब्द-हिंसा, चरित्र-हनन, और संगठित घृणा-प्रसार देखा जाता है, वह वास्तव में अहिंसा के व्यापक उल्लंघन की स्थिति है। गांधीवादी दृष्टिकोण से, हर पोस्ट, हर ट्वीट, हर टिप्पणी एक नैतिक कार्य है जिसके लिए व्यक्ति ज़िम्मेदार है। 'मैं तो बस अपनी राय व्यक्त कर रहा हूँ' का बहाना गांधी की नज़र में स्वीकार्य नहीं होता।

तीसरी बात सत्याग्रह की आधुनिक व्याख्या से जुड़ी है। सत्याग्रह का मूल विचार था — विरोधी का हृदय-परिवर्तन, न कि विरोधी का विनाश। आज की 'कैंसिल कल्चर' इसके बिल्कुल विपरीत है, जो किसी भी व्यक्ति को एक गलती के कारण सामाजिक रूप से ध्वस्त करने का प्रयास करती है। गांधीवादी दृष्टिकोण कहेगा कि भूल करने वाले को सुधारने का अवसर दिया जाए, उसकी मानवीयता का सम्मान बनाए रखा जाए, और प्रतिरोध रचनात्मक हो — विध्वंसक नहीं।

चौथी बात संगठनात्मक स्थायित्व से जुड़ी है। गांधीवादी आंदोलनों की एक बड़ी ताकत यह थी कि वे केवल भावना के उन्माद पर नहीं चलते थे — उनके पीछे एक मज़बूत संगठनात्मक ढाँचा, स्पष्ट नेतृत्व, और दीर्घकालिक रणनीति होती थी। आज के अधिकांश डिजिटल आंदोलन इस मायने में कमज़ोर हैं — वे जल्दी उठते हैं और जल्दी ही बिखर जाते हैं। हैशटैग ट्रेंड कर सकता है, परंतु ज़मीनी परिवर्तन के लिए जिस संगठित प्रयास की आवश्यकता है, वह अक्सर अनुपस्थित होता है। यहाँ गांधीवादी विरासत से सीख ली जा सकती है — कि डिजिटल मंच केवल लामबंदी का साधन है, वास्तविक काम तो ज़मीन पर ही होता है।

पाँचवीं बात स्वराज और सर्वोदय से संबंधित है। डिजिटल युग में 'स्वराज' का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं है — यह डेटा संप्रभुता, डिजिटल आत्म-निर्भरता, और तकनीकी पराधीनता से मुक्ति का प्रश्न भी है। आज जब कुछ बड़ी विदेशी कंपनियाँ हमारे डेटा, ध्यान और विमर्श पर नियंत्रण रखती हैं, तो गांधी का स्वराज एक नया अर्थ ग्रहण कर लेता है। इसी प्रकार 'सर्वोदय' का अर्थ है कि डिजिटल विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे — डिजिटल विभाजन (digital divide) को पाटा जाए, और तकनीक केवल विशेषाधिकार-प्राप्त वर्गों तक सीमित न रहे।

छठी बात आत्म-शुद्धि और डिजिटल अनुशासन से जुड़ी है। गांधी के लिए कोई भी सामाजिक कार्य व्यक्तिगत आत्म-शुद्धि के बिना अधूरा था। आज के संदर्भ में 'डिजिटल मिनिमलिज़्म', 'डिजिटल उपवास', और सचेत सोशल मीडिया उपयोग — ये सब गांधीवादी दर्शन के आधुनिक अनुप्रयोग हैं। एक व्यक्ति जो दिन में दस घंटे स्क्रीन पर बिताता है और हर पोस्ट पर भावनात्मक रूप से प्रतिक्रिया देता है, वह न तो स्वस्थ नागरिक बन सकता है, न ही प्रभावी सक्रियतावादी।

हालाँकि, इस अध्ययन की कुछ सीमाएँ भी हैं। पहला, यह मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है — प्राथमिक सर्वेक्षण नहीं किया गया। दूसरा, 'गांधीवादी अनुकूलता सूचकांक' एक प्रारंभिक मॉडल है जिसमें और परिष्करण की गुंजाइश है। तीसरा, अध्ययन का केंद्र मुख्यतः भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय आंदोलनों पर है — स्थानीय स्तर के छोटे अभियानों का गहन अध्ययन नहीं हो पाया है। भविष्य के शोध में इन सीमाओं को दूर किया जा सकता है।

## 7. निष्कर्ष (Conclusion)

यह शोध पत्र इस मूल प्रश्न से शुरू हुआ था — क्या गांधी का दर्शन डिजिटल युग में प्रासंगिक है? विस्तृत विश्लेषण के बाद उत्तर स्पष्ट है: गांधी न केवल प्रासंगिक हैं, बल्कि कई मायनों में पहले से अधिक आवश्यक हो गए हैं। यह विरोधाभास लग सकता है कि एक व्यक्ति जो स्वयं तकनीक के प्रति संशयी था, चरखे को आधुनिक मशीनों से अधिक महत्वपूर्ण मानता था, और शांत आत्म-चिंतन को राजनीतिक सक्रियता का आधार बताता था — वह आज के तेज़, हिंसक और सतही डिजिटल युग में एक मार्गदर्शक बन सकता है। परंतु यही गांधी की महानता है — उनका दर्शन समय की सीमाओं से परे है।

इस अध्ययन के मुख्य निष्कर्षों को तीन बिंदुओं में सारांशित किया जा सकता है। पहला, सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वराज और सर्वोदय — ये पाँच गांधीवादी सिद्धांत डिजिटल युग के पाँच प्रमुख प्रश्नों — फ़र्ज़ी ख़बरें, ऑनलाइन हिंसा, सक्रियता की रणनीति, डेटा संप्रभुता, और डिजिटल समावेशन — के उत्तर खोजने में सहायक हैं। दूसरा, हाल के आंदोलनों — विशेष रूप से किसान आंदोलन और फ्राइडे फॉर फ्यूचर — ने यह सिद्ध किया है कि गांधीवादी रणनीतियाँ डिजिटल माध्यम के साथ संयोजन में और अधिक प्रभावी हो सकती हैं। तीसरा, डिजिटल युग की कई समस्याएँ — ट्रोलिंग, घृणा-प्रसार, स्लैक्टिविज़्म — गांधीवादी मूल्यों के विरुद्ध हैं, और इन्हें दूर करने के लिए एक नया 'डिजिटल सत्याग्रह' विकसित करना आवश्यक है।

व्यावहारिक दृष्टि से कुछ सिफ़ारिशें भी की जा सकती हैं। पहला, स्कूल और कॉलेज स्तर पर 'गांधीवादी डिजिटल नैतिकता' का पाठ्यक्रम शामिल किया जाना चाहिए, जो छात्रों को न केवल तकनीकी कौशल बल्कि नैतिक उपयोग की समझ भी दे। दूसरा, मीडिया साक्षरता और तथ्य-जाँच के अभियानों को व्यापक स्तर पर चलाया जाना चाहिए, जिसमें गांधीवादी सत्याग्रह की भावना केंद्रीय हो। तीसरा, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्मों को अपनी एल्गोरिथम-नीति में बदलाव करना चाहिए ताकि भड़काऊ सामग्री की तुलना में संयमित और रचनात्मक विमर्श को बढ़ावा मिले। चौथा, नागरिक समाज और सरकार दोनों को मिलकर 'डिजिटल स्वराज' की दिशा में काम करना चाहिए — चाहे वह डेटा संरक्षण क़ानूनों के माध्यम से हो या स्वदेशी डिजिटल बुनियादी ढाँचे के विकास के माध्यम से।

अंत में, यह कहना उचित होगा कि गांधी का दर्शन एक स्थिर सिद्धांत-संग्रह नहीं है, बल्कि एक जीवंत, गतिशील नैतिक परंपरा है। हर युग अपने प्रश्न उसके सामने रखता है, और हर बार यह दर्शन नए उत्तर देने में सक्षम सिद्ध होता है। डिजिटल युग की चुनौतियाँ अभूतपूर्व हैं, परंतु उन्हें संबोधित करने के लिए गांधी जिन उपकरणों की ओर इशारा करते थे — सत्य, अहिंसा, संयम, आत्म-अनुशासन, और सर्वकल्याण — आज भी प्रासंगिक हैं। गांधी 'समय से परे' इसलिए हैं क्योंकि उनके मूल्य मानवीय गरिमा, नैतिक उत्तरदायित्व और सामूहिक कल्याण पर आधारित हैं — और ये मूल्य किसी भी युग में, किसी भी तकनीक में अप्रचलित नहीं हो सकते।

## संदर्भ सूची (References)

- [1] गुहा, आर. (2018) *गांधी: द इयर्स दैट चेंज्ड द वर्ल्ड, 1914-1948*. नई दिल्ली: पेंग्विन रैंडम हाउस।
- [2] पारेख, बी. (2020) *गांधी: ए वेरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन*. दूसरा संस्करण. ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- [3] वी आर सोशल एंड मेल्टवाटर (2024) *डिजिटल 2024 ग्लोबल ओवरव्यू रिपोर्ट*. लंदन: वी आर सोशल।
- [4] तुफेकसी, जे. (2017) *ट्विटर एंड टियर गैस: द पावर एंड फ्रेजिलिटी ऑफ नेटवर्क प्रोटेस्ट*. न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस।
- [5] कैस्टेल्स, एम. (2015) *नेटवर्क्स ऑफ आउटरेज एंड होप: सोशल मूवमेंट्स इन द इंटरनेट एज*. दूसरा संस्करण. कैम्ब्रिज: पॉलिटी प्रेस।
- [6] वैद्यनाथन, एस. (2018) *एंटीसोशल मीडिया: हाउ फेसबुक डिस्कनेक्ट्स अस एंड अंडरमाइंड डेमोक्रेसी*. ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- [7] उडुपा, एस. (2023) 'डिजिटल हेट: द ग्लोबल कंजंकचर ऑफ एक्सट्रीम स्पीच', *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन*, 17(1), पृष्ठ 244-263।
- [8] नौरिया, ए. (2019) *द अफ्रीकन एलीमेंट इन गांधी*. नई दिल्ली: नेशनल गांधी म्यूजियम।
- [9] शिकी, सी. (2008) *हियर कम्स एवरीबॉडी: द पावर ऑफ ऑर्गनाइजिंग विदाउट ऑर्गनाइजेशन*. न्यू यॉर्क: पेंग्विन प्रेस।
- [10] पारेख, बी. (2021) 'गांधी एंड द एथिक्स ऑफ ट्रुथ इन द डिजिटल एज', *गांधी मार्ग क्वार्टर्ली*, 43(2), पृष्ठ 145-162।
- [11] मंटेना, के. (2022) 'शोडाउन इन द स्ट्रीट्स: नॉनवॉयलेंस एंड ट्वेंटी-फर्स्ट सेंचुरी पॉलिटिकल एक्शन', *साउथ एशियन हिस्ट्री एंड कल्चर*, 13(4), पृष्ठ 487-504।
- [12] पाल, जे. और गोनावेला, ए. (2022) 'पॉलिटिकल सोशल मीडिया इन इंडिया: स्टडीइंग द सिटीजन-पॉलिटिशियन रिलेशनशिप', *इन्फॉर्मेशन, कम्युनिकेशन एंड सोसाइटी*, 25(8), पृष्ठ 1119-1136।
- [13] वोसुगी, एस., रॉय, डी. और अराल, एस. (2018) 'द स्प्रेड ऑफ ट्रू एंड फॉल्स न्यूज ऑनलाइन', *साइंस*, 359(6380), पृष्ठ 1146-1151।
- [14] देसाई, ए. और वाहेद, जी. (2020) *द साउथ अफ्रीकन गांधी: स्ट्रेचर-बियरर ऑफ एम्पायर*. नई दिल्ली: नवयान पब्लिशिंग।
- [15] स्टैटिस्टा रिसर्च डिपार्टमेंट (2024) *सोशल मीडिया यूसेज इन इंडिया — स्टैटिस्टिक्स एंड फैक्ट्स*. हैम्बर्ग: स्टैटिस्टा।
- [16] सुंदर, पी. (2023) 'गांधियन एथिक्स इन द एज ऑफ सोशल मीडिया', *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, 58(15), पृष्ठ 32-39।
- [17] हूटसूट एंड वी आर सोशल (2024) *डिजिटल 2024 इंडिया रिपोर्ट*. लंदन: वी आर सोशल।
- [18] आईएमएआई (IAMAI) और कांतार (2024) *इंटरनेट इन इंडिया रिपोर्ट 2024*. नई दिल्ली: इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया।

- [19] रॉयटर्स इंस्टीट्यूट (2024) *डिजिटल न्यूज रिपोर्ट 2024*. ऑक्सफोर्ड: रॉयटर्स इंस्टीट्यूट फॉर द स्टडी ऑफ जर्नलिज्म।
- [20] रॉय, एस. (2023) 'हैशटैग एक्टिविज्म एंड द रीफ्रेमिंग ऑफ इंडियन पब्लिक प्रोटेस्ट', *कंटेम्परेरी साउथ एशिया*, 31(2), पृष्ठ 217-234।